IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक परिवेश में हिमाचल प्रदेश के पारम्परिक वस्त्र

शोधार्थी – पूजा शर्मा

दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला,

सारांश

वस्त्र और फैशन का अपना पुराना व महत्वपूर्ण रिश्ता रहा है। कभी कभी यह एक दूसरे के स्थान पर सहज ही उपयोग किए जाते हैं। वस्त्र उघोग व वस्त्र निर्माण के लिए रचनात्मक व तकनीकी कौशल का होना अनिवार्य है। वस्त्र व फैशन विविध व लगातार विकसित होने वाला क्षेत्र है। फैशन का अभिप्राय केवल अलग व सुन्दर दिखने में न होकर अपनी पुरातन संस्कृति को सजोए रखना व सामाज और पर्यावरण को हानी न पहुचाने की जिम्मेदारी में भी है।

हिमाचल एक छोटा व पहाडी क्षेत्र है और बहुत सी विविधता लिए हुए भी है यहां अलग व आकर्षक वेशभूषा है। अधिक सर्दी होने के कारण यहां लगभग पूरे वर्ष गरम व ऊनी वस्त्रों का उपयोग किया जाता है जिन्हें यहां के लोग पारम्परिक घरेलू हथकरघों में तैयार कर पहनते हैं। आधुनिकता नें किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं छोडा है और हिमाचल के इन पारम्परिक वस्त्रों में और अलंकरण में आधुनिकता आना कोई विचित्र बात नही है और हिमाचल के मोटे ऊनी वस्त्रों में भी विभिन्न आधूनिक डिजाइन का आगमन होने लगा है। अगर बात करें चम्बा रूमाल की कढाई की तो इसके अलंकरण में आधुनिकता और आधुनिक समय में साडी व ढाठू (सर का वस्त्र) पर भी कढाई के कार्य किए जा रहे हैं। ऊन की पटटी में जो अलंकरण की हुई होती है विभिन्न जगहों पर उपयोग किया जाने लगा है जैसे बैग, पर्स, चाबि का छला इत्यादी । पटटू व शॉल के कपडे से महिलाओं के लिए कुर्ता प्यजामा आदी बनाए जाने लगे है। और बहुत सी नई संस्थाएं इन कार्यों से अपनी संस्कृति को सजोए रखने का कार्य कर रही हैं। इस प्रकार यह कहना सर्वदा उचित होगा की आधुनिकता ने इन पारम्परिक वस्त्रों की सुन्दरता को बढाने व विश्व भर में प्रसिद्धि पाने के लिए सकारात्मक कार्य किया है।

शोध पत्र

आधुनिकता शब्द जो विशेषकर कला व साहित्य में हुए परिवर्तनों से जुडा हुआ माना जाता है । आधुनिकता की उत्तपति की तिथि ज्ञात करना एक असम्भव सा कार्य है। आधुनिकता का जुडाव शहरीकरण, औद्योगीकरण, विकास आदी से भी है और यह एक विवादास्पद विषय भी है जबकि आम बोल चाल में इसका प्रचलन बहुत बड गया है। आधुनिकता का अर्थ है वर्तमान या हाल ही में जो घट रहा है या नए मुल्यों एवं नई सोच का जन्म। परम्पराओं का विरोध करना व नयापन अपनाना इसकी विशेषता है।मानव जीवन के विभिन्न पहलूओं पर आधुनिकता का प्रभाव पडा है जैसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक। इसने सुविधाओं के साथ साथ जटिल समस्याओं को भी जन्म दिया है। जिस प्रकार आधुनिकता ने किसी भी क्षेत्र को अछुता नहीं छोडा है उसी

प्रकार ही हिमाचल में विभिन्न क्षेत्रों जेसे खान –पान, रहन –सहन, बोल–चाल, जीवन पद्धति व वस्त्रों को तो सबसे अधिक प्रभावित किया है आधुनिक समय में कम्पयूटर, मोबाईल व वैश्विकरण ने मानव के जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है जिस कारण पश्चिम की जीवन पद्धति को युवा अधिक आत्मसात कर रहे हैं और पहनावे में तो छोटे से छोटे दूर दराज के गांव में भी परिवर्तन देखने को मिला है। हिमाचल के युवाओं के जीवन में भी आधुनिकता का प्रवेश बडे पैमाने पर हुआ है।पश्चिमि पहरावे का उपयोग अधिक हो गया है स्कूल,कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों मे पेंट,शर्ट, टी शर्ट इत्यादी का अधिक प्रचलन हुआ है जो कि उपल्बधता ,वैश्विकरण ,टेक्नोलोजी के प्रभाव हैं। आधुनिकता और बदलाव की बात करे तो पहले पौराणिक्ता की भी बात करनी होगी हिमाचल के पुराने वस्त्रों में ऊन व मोटे वस्त्रों का अधिक उपयोग किया जाता है जिसमें दोहडू,पटटू,प्रमुख है हिमाचल में 12 जिलें हैं और प्रत्येक जिले के अपने अलग अलग पहनावे हैं और हिमाचल के इन विभिन्न जिलों व क्षेत्रों में भिन्न भिन्न पहिरावे अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं झोगा ऊपरी दह पर पहना जाने वाला वस्त्र है झोगटु और कुछ विशेषताओं के साथ कलीदार कमीज झोगा कहलाया यह कुच्छ लम्बा तथा बाजू के अग्रभाग कफ युक्त होते हैं। महिलाएं भी झोगा पहनती हैं जिसमें कभी कभी चांदी के बटन लगाए जाते थे। हिमाचल के इन पहिरावों को देखने भर से क्षेत्र का पता लगाया जा सकता है। यह पहरावे मुख्यतः विवाह, मेले,त्यौहार आदी उत्सवों पर पहने जाते हैं। जलवायू अनुकूल वस्त्र होने के कारण यहां मुख्यता मोटे ऊन के वस्त्रों का उपयोग किया जाता है। मोटे वस्त्रों का नाम सुन कर साधारण प्रकार के मोटे वस्त्रों की छवि मानस पटल पर दिखाई देती है किन्तु यहां सब इसके विपरित है सजना संवरना मानव का स्वभाव रहा है मुख्यता महिलाओं में यह भावना अधिक प्रबल होती है इसलिए जब हिमाचल की महिलांए अपने पारम्परिक वेशभूषा पहनती हैं तो बहुत ही आकर्षक अलंकरणों व रंगों के साथ एक कलात्मक व परिश्रम से भरपूर नमूने का प्रदर्शन करती हैं। चटक रंगों के साथ साथ आकर्षक व साधारण दिखने वाले इन ऊन के वस्त्रों पर यहां के बुनकर कारिगरों नें अत्यंत सुन्दर कला को उकेरा है जो कि न केवल कला प्रेमी किन्तु सामान्य जन मानस को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पटटू मुख्यता कुल्लू, किन्नौर व लाहौल, स्पीति में प्रचलित है यह शाल की तरह किन्तु अधिक मोटा व भारी होता है। शरीर को गर्म रखने के साथ साथ दैनिक कार्यों को करने में भी आरामदायक होते हैं। थोबी जो बकरी के बालों को कात कर बनाया जाता है खुरदरा, काले भूरे चेक में बनाया जाता है और दो भागों को बुन कर बाद में केन्द्र में टांको से जोडा जाता है। ऊन से काली सफेद धारियों वाला कम्बल, पटटु, पटटी, खडचे,चुक्तु, चुन्दन आदी कहलाते हैं। रंगबिरंगी धारियों दोहडू , मफलर, कुल्लुशॉल,कोट की पटटी ,बुशहरी टोपी, इत्यादी प्रमुख हैं और विश्व भर मे प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त कढाई इत्यादी का कार्य भी यहां किया जाता है जो कि रूमाल,सिरहानों, डाठू, चादर, मेजपोश व अन्य घरेलू कपडों पर किया जाता है चम्बा का रूमाल इसका सबसे सुन्दर उदाहरण है। सुथण,पाजामें मोटे व मजबूत वस्त्रों से बनाए जाते हैं इस सुथण को यहां के लोग विशेष खेल ठोडा नृत्य के समय पहनते हैं। स्त्रियों द्वारा सामान्य सलवार, गरारा ,पजामी व सुथणी पहनी जाती है जिसमें घुटने से निचे चुडियां बनी होती हैं सदरी जो कमीज के उपर पहनी जाती है जिसे बास्केट या सदरी, जैकेट के नाम से भी जाना जाता है यह ठण्ड से बचाव के साथ साथ शोभा दायक वस्त्र का काम करती है। महिलाओं द्वारा कूर्ती, गाची ,लुगडी, फिट पजामी के बाहर घेरावदार वस्त्र रेजटा जिसे घाघरा भी कहा जाता है जिसे विशेषतया नृत्य उत्सव आदी अवसरों पर पहना जाता है। लोइया भी यहां का विशेष ऊनी वस्त्र है। उपरी पहाडी भाग में ऊन के कपडों में गदिद

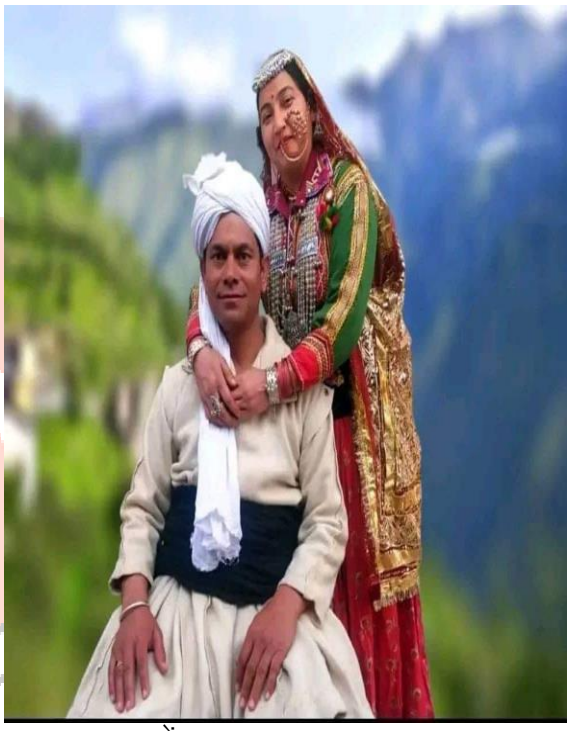

चोला,चोलू डोरा,लंवाचडी,इत्यादी है जो विशेष रूप से सलेटी रंग की ऊन से बनाया जाता है कमर पर गाची सर पर चदरू और पैरों में ऊन की मोटी जुराब व घास के बने पूले जो अब न के बराबर देखने को मिलते हैं पहने जाते थे व विभिन्न प्रकार की टोपियों का उपयोग भी किया जाता है। विशेष क्षेत्रों में प्रचलित लोक गीतों से भी उस क्षेत्र की संस्कृति का पता चलता है हिमाचल के लोकगीतों में भी यहां की संस्कृति व पहरावे का वर्णन किया जाता है।

आधुनिक समय में इन मोटे वस्त्रों में अलंकरण के रूपाकारों में बदलाव देखने को मिलता है जिस कारण यह और भी आकर्षक एवं रंगीन हो गए हैं। इस आकर्षण के कारण इन वस्त्रों को नव जीवन प्राप्त हुआ है और युवाओं में भी आजकल पारम्परिक वस्त्रों के प्रति आकर्षण बडा है और नए नए अलंकरणों का समावेश हुआ है। हिमाचल ही नहीं अपितु बाहर के राज्यों व देश, विदेश के लोगों में भी हिमाचल की यह वस्त्र निर्माण कला विख्यात व आकर्षण का कारण रही है। यहां घूमने आए सैलानी भी इन वस्त्रों को पहने बिना नहीं रह पाते । टोपीयों में भी विभिन्न रंगो व नए अलंकरणों का समावेश हुआ है तो कढाई के कार्य केवल रूमाल तक सीमित न रह कर अन्य वस्त्रों जैसे मफलर, साडी, कूर्ते,तकिए, चादर इत्यादी पर भी कढाई के कार्य किए जाते हैं।हिमाचल के वस्त्र प्रर्यावरण को बिना हानी पहुंचाए तैयार किए जाते हैं जिस कारण इनका उपयोग करना सर्वदा उचित व अपराध बोध से परे है।

संदर्भ ग्रंथ

- AshokJerath -The splendour of Himalayan Art and culture-Indus Publishing Company new delhi
- Neelima Dahiya-The art and craft in northeren India(from the earliest time to c.200bc)-BR Publishing corporation delhi .
- Dr. Kiran singh –Textile in ancient India – Vishwavidyalaya Prakashan chowk, Varanasi-.
- Kamaladevi chattopadhyay-Glory of Indian Handicrafts-Indian Book Company new delhi1976
- Kamala devi chattopadhyay- Indian Handicrafts
- ओम चन्द हाण्डा – पश्चिमी हिमालय की लोक कलाएं।
- रूप शर्मा– हिम दर्पण।